A–1064

Total Pages : 2 **Roll No. .....**

GEJY-01

भारतीय वास्तुशास्त्र का परिचय व स्वरूप

Examination, June 2025

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 100

नोट : यह प्रश्न-पत्र सौ (100) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 2×26=52

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए छब्बीस (26) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. वास्तुशास्त्र के प्रयोजन पर निबन्ध लिखें।

2. पंचमहाभूतों का वास्तुशास्त्र की दृष्टि से विवेचन करें।

3. ईशान विस्तार युक्त भुखण्ड के विषय में विस्तृत उल्लेख करें।

4. भूखण्ड चयन में कौन कौन सी मुख्य विशेषताएं ध्यान देने योग्य है। सविस्तार उल्लेख करें।

5. गृहनिर्माण विधि का सविस्तार वर्णन करें।

खण्ड–ख

लघु उत्तरीय प्रश्न 4×12=48

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बारह (12) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. गृहारम्भ में पंचांग शुद्धि तथा लग्नशुद्धि का वर्णन करें।

2. वास्तुशास्त्र की मयपरम्परा पर निबन्ध लिखें।

3. पंचमहाभूतों का ग्रहों से क्या सम्बन्ध है, स्पष्ट कीजिये।

4. नैर्ऋत्यकोण की ओर ढलान वाली भूमिका विस्तार से उल्लेख करें।

5. अप्रशस्त भूमि के स्वरूप को प्रतिपादित कीजिये।

6. वायव्य स्थित भूखण्ड के शुभाशुभ प्रभावों का वर्णन करें।

7. आकाशतत्त्व एवं वायुतत्त्व के स्वरूप का वर्णन करें।

8. भारतीय वास्तुशास्त्र की वर्तमान में क्या उपयोगिता है इसे स्पष्ट करें।

****